सब्ज़ियाँ

अधिक जानकारी के लिए संपर्क:
82 7373 3030/82 7373 3535

क्षेत्रफल: 20 गुंठे
रोपण काल: जून – जुलाई 2025
रोपाई दूरी: 5 x 1.5 फीट
रोपण पद्धति: रेज्ड बेड (गादी वाफा)

प्रकार: विभिन्न प्रकार की सब्ज़ियाँ (दोंडका, मूली, खीरा, करेला, चुकंदर, बैंगन, टमाटर, मिर्च, भिंडी, पालक, पत्ता गोभी, फूल गोभी, शकरकंद, अमरूद, धनिया, चेरी टमाटर, आलू, मटर आदि)

भूमि का चयन: अच्छी जलनिकासी वाली, मध्यम से भारी, बलुई दोमट मिट्टी सब्ज़ी की खेती के लिए उपयुक्त होती है।

उर्वरक और पानी प्रबंधन: उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण और विशेष शिफारस के अनुसार करना चाहिए। रासायनिक उर्वरकों और जैविक उर्वरकों का सही ढंग से उपयोग करना चाहिए। यदि पानी की व्यवस्था ड्रिप सिंचाई के माध्यम से की जाए तो वह लाभदायक होती है।

कटाई: सब्ज़ियों की कटाई उचित समय पर करनी चाहिए, जिससे उनकी गुणवत्ता बनी रहे। कटाई के बाद सब्ज़ियों को ठीक से संग्रहित करना चाहिए। कुछ सब्ज़ियों को प्रोसेस कर उनकी आयु बढ़ाई जा सकती है।

उत्पादन: अच्छी तरह से प्रबंधित और सुव्यवस्थित प्लॉट में पत्तेदार सब्ज़ियाँ 30 से 45 दिनों में और फल वाली सब्ज़ियाँ 45 से 60 दिनों के बाद उत्पादन देती हैं।

कीट एवं रोग: कीट और रोगों के प्रकोप को रोकने के लिए रोकथाम के उपाय आवश्यक हैं। फसल की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जैविक और जीवाणु उर्वरकों का उचित मात्रा में उपयोग करना लाभदायक होता है तथा जैविक कीटनाशकों और कीट नियंत्रकों का प्रयोग लाभदायक होता है।

कीट: माहू, सफेद मक्खी, फल मक्खी, पत्तियाँ खाने वाली इल्ली आदि।
रोग: तना सड़न, स्कैब, काली सड़न, फल सड़न, भूरे धब्बे, डाउनी मिल्ड्यू, पावडरी मिल्ड्यू आदि।

सब्ज़ियाँ

अधिक जानकारी के लिए संपर्क:
82 7373 3030/82 7373 3535

क्षेत्रफल: 20 गुंठे
रोपण काल: अगस्त - सितंबर 2025
रोपाई दूरी: 5 x 1.5 फीट
रोपण पद्धति: रेज्ड बेड (गादी वाफा)

प्रकार: विभिन्न प्रकार की सब्ज़ियाँ (दोंडका, मूली, खीरा, करेला, चुकंदर, बैंगन, टमाटर, मिर्च, भिंडी, पालक, पत्ता गोभी, फूल गोभी, शकरकंद, अमरूद, धनिया, चेरी टमाटर, आलू, मटर आदि)

भूमि का चयन: अच्छी जलनिकासी वाली, मध्यम से भारी, बलुई दोमट मिट्टी सब्ज़ी की खेती के लिए उपयुक्त होती है।

उर्वरक और पानी प्रबंधन: उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण और विशेष शिफारस के अनुसार करना चाहिए। रासायनिक उर्वरकों और जैविक उर्वरकों का सही ढंग से उपयोग करना चाहिए। यदि पानी की व्यवस्था ड्रिप सिंचाई के माध्यम से की जाए तो वह लाभदायक होती है।

कटाई: सब्ज़ियों की कटाई उचित समय पर करनी चाहिए, जिससे उनकी गुणवत्ता बनी रहे। कटाई के बाद सब्ज़ियों को ठीक से संग्रहित करना चाहिए। कुछ सब्ज़ियों को प्रोसेस कर उनकी आयु बढ़ाई जा सकती है।

उत्पादन: अच्छी तरह से प्रबंधित और सुव्यवस्थित प्लॉट में पत्तेदार सब्ज़ियाँ 30 से 45 दिनों में और फल वाली सब्ज़ियाँ 45 से 60 दिनों के बाद उत्पादन देती हैं।

कीट एवं रोग: कीट और रोगों के प्रकोप को रोकने के लिए रोकथाम के उपाय आवश्यक हैं। फसल की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जैविक और जीवाणु उर्वरकों का उचित मात्रा में उपयोग करना लाभदायक होता है तथा जैविक कीटनाशकों और कीट नियंत्रकों का प्रयोग लाभदायक होता है।

कीट: माहू, सफेद मक्खी, फल मक्खी, पत्तियाँ खाने वाली इल्ली आदि।
रोग: तना सड़न, स्कैब, काली सड़न, फल सड़न, भूरे धब्बे, डाउनी मिल्ड्यू, पावडरी मिल्ड्यू आदि।